International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197; Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 760-770

बोड़ो लोकगीतों का अनुशीलन

जयन्त कुमार बोरो

विभागाध्यक्ष एवं असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कोकराझार गवर्मेन्ट कॉलेज, कोकराझार, असम, भारत।

सारांश

किसी भी समाज में लोकगीत का विशेष महत्व रखता है। भारत के इतिहास में यह देखने को मिलता है कि देश के समाजिक एवं सास्कृतिक वातावरण में लोकगीत की क्या भूमिका रही हैं। लोरगीत एक समुदाय की मौखिक साहित्य का मूलाधार है। लोकसाहित्य में किसी वर्ग अथवा समुदाय के भाव एवं सामाजिक चेतना के इतिहास को अवलोकन किया जा सकता है। बोड़ो असम प्रांत की सबसे प्राचीन जनजाति में से एक हैं। यह जनजाति पूरे असम प्रान्त मे फैला हुआ है। इस जनजाति की अपनी परम्परा, रीति आदि प्राचीन काल से चली आ रही है। इनकी कुछ प्राचीन परम्परायें लोकगीतों के माध्यम से मुखरित हुई हैं। बोड़ो लोकगीतों को मूल्यांकन के दृष्टकोण से विविध श्रेणियों में विभक्त कर इसका अनुशीलन किया जा सकता हैं। जैसे- (क) राष्ट्रभक्ति, (ख) समाजिक, (ग) रोमान्टिक, (घ) धार्मिक – 1- प्रार्थनात्मक, 2. उपदेशात्मक, 3. आध्यात्मिक, (भ) बालगीत, (च) विवाह गीत इत्यादि।

मूल शब्द : लोकगीत, इतिहास, सास्कृतिक, चेतना, अवलोकन

प्रस्तावना

लोकगीत किसी एक व्यक्ति विशेष की नहीं अपितु एक जाति या समुदाय की सामुहिक अभिव्यक्ति होती है। साहित्य के अन्य विधाओं में लेखक या विचारक के अपनी स्वयं की अनुभूति या भावना छिपी रहती हैं। परन्तु लोक साहित्य में ऐसी भावना छिपे होने की सम्भावना नहीं होती। यह सदैव सामुहिकता के साथ जुड़ा हुआ होता हैं। लोक की ओर उन्मुख हुये बिना कोई और साहित्य मानवीय भावना को प्रकट नहीं कर सकता। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यदि अवलोकन किया जाए तो इनके (बोड़ो) सामाजिक प्रक्रियाओं के विविध स्तरों में लोक के साथ सम्पृक्तता को देखा जा सकता हैं। लोकगीतों में इनकी भावनायें समाहित है जिसे वे ऋतुओं से सम्बन्धित कृषि कालीन और सामाजिक उत्सवों के माध्यम से भावों को अभिव्यक्त करते हुये आ रहे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत आलेख में बोड़ो लोक जीवन की झाँकी लोकगीत में किस प्रकार से अभिव्यक्त हुआ है उसे वर्णन करने का प्रयास किया गया है। लोकगीत प्रत्येक मानव समुदाय के जीवन का एक अभिन्न अंग है। प्रत्येक समाज में लोकगीत का अपना विशिष्ट स्थान है। बोड़ो समुदाय में भी लोकगीत का विषेश महत्व रहा है और आगे भी रहेगा। लोक के अभाव में लोक साहित्य का कोई जीवन नहीं हैं। बोड़ो समाज-संस्कृति में लोकगीत अपने विशेष स्थान को निर्धारित करता है तथा इसी से सम्बन्धित अध्ययन को आगे बढ़ाना ही प्रस्तुत शोध का उद्देश्य हैं।

शोध सामाग्री

प्रस्तुत आलेख की शोध सामाग्री विविध प्रकार के लेखों और साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त किया गया गया है। लोक साहित्य से सम्बन्धित ग्रन्थों में से आलेख को पुरा करने के लिए काफी मदद मिली हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत लेख की विषय वस्तु के अध्ययन के लिए विशलेषणात्मक एवं ऐतिहासिक पद्धति को अपनाया गया है तथा यह विषय समीक्षात्मकता पद्धति की भी मांग रखता है।

अध्ययन का महत्व

लोकगीत जिसका सीधा सम्बन्ध किसी भी जाति और समुदाय का अभिन्न रुपों में होता है। इसमें उस जाति विशेष की भाव-विचार, भावनायें, स्वाभिमान आदि सभी सम्बद्ध होता है। बोड़ो लोकगीत में उनके भाव-भगिमायें विशेष रुप से अभिव्यक्त हुआ है। एक समाज या संगठन जिसका सम्बद्ध समाज की जमीन से जुड़ी हुई होती है उनके लिए लोकगीतों का विशेष महत्व को प्रदर्शित करता है। लोकगीत में जो भावनायें अन्तर्निहित होती है वह उस समाज या जाति की अपनी मौलिक भावनायें होती हैं।

अध्ययन का विश्लेषण

तत्कालीन और वर्तमान बोड़ो समाज एवं संस्कृति में काफी परिवर्तन आ चुका है। यह समय का ही परिणाम है। समय के प्रवाह में इसमें अन्तर दिखना स्वाभाविक है। लेकिन फिर भी उनके लोकगीतों में सहज-सरल भाव सम्पृक्त है। वे अपनी भावनाओं और विचारों को सरल रुप में प्रकट करने में अधिक विश्वास रखते है न कृतिम रुपों में।

बोड़ो लोकगीतों के अनुशीलन में राष्ट्रभक्ति परक गीतों को भी परिलक्षित किया जाता है। राष्ट्रभक्ति परक लोकगीतों में मातृभूमि के प्रति सूपुतों को समर्पित होते हुये भावों को देखा जा सकता है। उनके राष्ट्रभक्ति परक गीतों में मातृभूमि को हमेशा समृद्ध होकर रहने की बात कहीं गई है- बोड़ो मूल भाषा में-

आय आंगो हादाब
दैमा दैसा आय जिरि जिरि
बंफां लाइफां आय सारि सारि
सोमोनांथाव, नायबाय थाथाव
सोरजिरिगिरि सोरजिनाया।
आय आंगो हादाब
सिरि मोनदिया बिमा दाबोनो
उन्दुलांखो मानो गोदो गोदो।
सिखांदो सिरि मोनदो,
गोदोनाय हारिखौ दिखांलांदो।
हादोरखौ फोसाब लांदो
आय आंगो हादाब।[1]

हिन्दी में अनुहित रुप

ओ प्यारी मातृभूमि।
समृद्ध हो तुम
मन्दध्वनियुक्त सरसर बहते
झरनों, पंक्तिबद्ध पेड़ो से ।
परितोष दो आखों को,
सृष्टि तुम ईश्वर की
कितनी हर्षवर्द्धक है प्यारी मातृभूमि।
ओह सुषुप्त तुम
अभी तक गहरी निद्रा में मग्न
जागो, हो सप्रणाम, प्यारी माँ
और उद्बोधित करो
इस सुप्त देश को।।[2]

उक्त गीत में राष्ट्र के प्रति मातृभूमि को सजग रहने की कामना करते हुये देखा गया है। क्योंकि अगर मातृभूमि जागृत रहेगी, तो उसके सन्तानें भी जागृत रहेगी। इस गीत में बोड़ो पुत्रों को देश तथा मातृभूमि की रक्षा के लिए सदैव जागृत होकर रहने के लिए आवाहन किया गया है तथा मातृभूमि की सुन्दरता और मनमोहकता पर भी विचार किया गया है। वहीं दूसरे एक अन्य राष्ट्र भक्ति परक लोकगीत में बोड़ो पुत्रो को देश सेवा के हेतु आवाहान कर क्षत्रिय बन तथा शत्रुओं से साथ लोहा लेने हेतु आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया है।

बोड़ो मूल भाषा में

फै ऐ बर फिसाफोर नोंसोर फै,
दावहा नांगो थांदिनि।
थुंग्रि लानानै बिखा फोरदानानै
दुसमनफोरखौ होसोदिनि।
आदा बासिराम जोहोलाव
नोंलाय गराइया दाब्रायलांदो।
आख्रा बुगदावनानै नोङो होसोलांदो।
नायहर हनै नायहर दुसमनफ्रालाय,
हाइलादो-हुइलादो फैलायगौ।
नाङा नाङा नांलायगोन हाजो गफायाव
थैया थैलायगोन दुसमना,
देरहालायगोन जों बर फोरा।
दागि आदा बासिराम जोहोलाव दागि नौङो,
जोहोलावनि फिसा, बिरनि फिसा नोंलाय उथ्रि होगोन
आदा दावहाराम जोहोलाव नोंबो दावगा लांदो,
नोंबो लामायाव बेंस हैदो।[3]

हिन्दी में अनुहित रुप

ओ बोड़ो पुत्रो आओ,
आओ बाहर,
हाथ में लेकर ढाल व तलवार
जाओं, शत्रुओं को सख्ती से खदेड़ो।
देखो, आ गया भाई बासिराम है अश्वारुढ़
शत्रुओं को सख्ती से खदेड़ो।
देखो आ गया वह दुश्मन सर्वशक्तिसम्पन्न,
लड़ो, होकर होशियार
शत्रुसैनिकों को पहुँचाओं यमलोक।
हम, बोड़ो जीतगे यह खेल
डरो मत, बासिराम। डरो मत
तुम पैदाइशी वीरसंतान
निश्चय ही विजयश्री वरेगी तुम्हें।
और तुम भाई दावहाराम
आगे बढ़ो,
रास्ते में शत्रुओं का करो संहार।।[4]

उक्त गीत के अवलोकन यह स्पष्ट हो जाता है कि बोड़ो जनजाति युद्ध प्रिय जाति रही है। प्रत्येक देश की सभी जातियाँ किसी न किसी रुप में शत्रुओं के युद्ध करना पड़ा। युद्ध में वीरता और कौशल का चित्रण स्पष्ट परिलक्षित होता है। प्रस्तुत गीत काल्पनिक रुप से दो वीर पात्रों का नाम उल्लेख किया गाय है- बासिराम और दावहाराम। इन दोनों के वीरो के आगमन को युद्ध में सैनिकों में उत्साह वृद्धि के दृष्टकोण से किया गया हैं ताकि सैनिकों का मनोबल बना रहे।

राष्ट्रभक्ति के साथ-साथ बोड़ो लोकगीत में सामाजिक भावनाओं को भी यथावत् स्थान दिया गया हैं। सामाजिक सन्दर्भों में पारिवारिक रिश्तों को भी लोकगीतों के माध्यम से अभिव्यक्त करते हुये देखने को मिल जाते हैं। जमाता और सास के मध्य सुन्दर वार्तालाप को एक सुन्दर उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है। जमाता सास से उसकी बेटी पर अनभिज्ञता का दोषारोपण करते है लेकिन सास इसका उत्तर जमाता को देती है।

बोड़ो मूल भाषा में

बिजामादैः- आयै आयै नोंनि फिसाजोआ
ना बाथोनखौनो देनो रोङा।
आयै देनो रोङा।
बिखुनजौः- रोङासो जावसौ
जोलै मोजां,
गावनो लाइनो रोङा गावनो
जानो रोङा।
बिजामादैः- आयै नोंनि नोंसाजोआ
फानलु बाथोनखौनो देनो रोङा।
आयै देनो रोङा।
बिखुनजौः- रोङासो जाबायगोन जावैसो
जोलै मोजां
गावनो मावनो रोङा, गावनो दांनो रोङा।[5]

हिन्दी में अनुहित रुप

जमाताः- माताजी। माताजी।
आपकी लड़की नहीं जानती है
चटनी तैयार करना
भूनी हुई मछलियों की।
सासः- क्यों नहीं जानती
ओ मेरे अच्छे वंश के दामाद !
आप खुद नहीं जानते,

कैसे मछली घर लाई जाय।
जमाताः- माताजी। माताजी।
आपकी लड़की नहीं जानती,
मिर्च की चटनी बनाना।
सासः- क्यों नहीं जानती ?
ओ मेरे अच्छे वंश के दामाद !
आप स्वतः अनभिज्ञ है
सभी कार्यों से।[6]

जमाता सास से यह कहता है कि उसकी बेटी पाक कला में निपुण नहीं है। बोड़ो समाज में खान पान की सस्कृति में प्रचलित मछली की चटनी को व्यंजन के रुप में ग्रहण किया जाता है। इसीलिए का आरोप है कि तुम्हारी बेटी चटनी बनाने में अनभिज्ञ है। लेकिन सास बेटी के बचाव में उत्तर देती है कि आप (जमाता) तो अच्छे वंश के दामाद होते हुये भी उत्तम प्रकार के मछली लाने में स्वयं अनभितज्ञ हो। गीत में जमाता पर भी सभी कार्यों पर अनभिज्ञ होने का आरोप लगाना माँ का पुत्री के प्रति विशेष लगाव को अनुभव किया जा सकता है।

लोकगीत का सम्बन्ध साधारण जीवन की रीत-नीति, विचार तथा अन्य विषयों से सम्पृक्त होता है। लोकगीत एक जाति अथवा समाज के विविध रुपों पर खड़ा रहता है। लोकगीत मौखिक साहित्य का एक रुप है, जिसमें एक जाति के अस्तित्व की अस्मिता को प्रकट करता है। प्रकृति के विविध विषयों के सहयोग से अपने विचारों किये गये दृश्य को देखा गया है। एक गीत में पति दूसरे स्त्रियों को यह स्पष्टीकरण देता है कि उसकी पत्नी भी कटाई-बुनाई जैसे कामों में पारंगत है, लेकिन लोग उस पर अनभिज्ञ होने का आरोप लगाते है।

बोड़ो मूल भाषा में

थिनथिं खालाय मोजोलाय
ऐ हिन्जावफोर नाय नाय।
आंनि हिन्जावखौ हाबा रोडा रोडा
होन्नाया
दावखा लाबोनाय मुस्रा गरसेखौनो
गामसा जरा दिहुनबाय।
नाय हिन्जातवखौ आंखौ अना अना
होन्नाया
दावखा लाबोनाय गय थायसेखौनो
फाथै गांसेजो बेसे जारौ जाहोबाय।
ऐ हिन्जावफोर नाय नाय।[7]

हिन्दी में अनुदित रुप

थिनथिं खालाय लाल चीटीं।
देखो ! देखो हे लाल स्त्रीगण !
आपने सोचा था कि मेरी पत्नी है
कटाई और बुनाई से अनभिज्ञ।
किन्तु उसने धोतियों की पूरी जोड़ी की बुनाई की है
उस सूत के गोले से
जो एक कौआ अपने चोंच में लाया था।
आपकी धारणा थी कि वह
मुझसे प्यार नहीं करती,
लेकिन उसने मेरा मुहँ लाल कर दिया
पान के टुकड़े से,
जो एक कौआ ढ़ोकर लाया था
देखो देखो है स्त्रीगण ! [8]

पति के द्वारा पत्नी की प्रशंसा में गाये गये इस गीत में उनके आदर्श वैवाहिक सम्बन्धों को अनुभव किया जा सकता है। 'कटाई' और 'बुनाई' का कार्य बोड़ो लोक जीवन में काफी महत्वपूर्ण स्थान को स्थापित करता है। असम के ग्रामीण अंचलों में रहने वाले प्रायः सभी समुदायों की स्त्रियाँ कपड़ा बुनने का काम घर पर ही किया करती है। बोड़ो स्त्रियाँ अपने लिए दोखना, पुरुषों के लिए गमछा और आरोनाई जैसे वस्त्र को तैयार करती हैं। विविध प्रकार के रगों के धागों के मिश्रण से वस्त्र बनाने का कार्य वे कुशलता पूर्वक करते हैं। कौआ शब्द को काल्पनिक रुप में प्रयोग कर यह स्पष्ट किया है कि उसने कौआ के द्वारा लाये गये सूत के गोले से उसे धोती की पुरी जोड़ो को बुनते हुये देथा हैं। एक अन्य को गीत को इस सन्दर्भ में उदाहरण स्वरुप लिया जा सकता है। जैसे-

बोड़ो मूल भाषा मे

दै जिरि जिरि साम खिखिरि
सनानि जिनजिरि
आगै सनानि जिनजिरि
ऐ लै आगै दानो रोडा रोडा होन्नाया,
लुनो रोडा रोडा होन्नाया,
मुस्रा गरसेजोंनो दालायबाय
इन्दि सि गांसेआ। [9]

हिन्दी में अनुदिक रुप

चान्दी के द्वार की तरह
नालों में बहते पानी में साय खिखिरि (snail)
ओ प्यारे चान्दी के द्वार !
लोक कहते हैं,
तुम अनभिज्ञ हो
कताई और बुनाई से।
तथापि मैंने तुझे देखा है
पूरी एरी (सूत) चादर एक गोले से। [10]

इस गीत में यह स्पष्ट हुआ है कि एक स्त्री के विषय में लोक कहते है कि उसे किसी प्रकार का बुनाई का काम नहीं आती है फिर भी उसका प्रेमी उसके अनभिज्ञ होने पर उसे कपड़ा बुनते हुये एक बार दर्शन किये है।

स्पष्टीकरण के रुप में यह कहा जा सकता है कि असम के ग्रामीण अंचलो एक लड़की को विवाह से पूर्व कटाई और बुनाई जैसे कामों में ज्ञान प्राप्त कर लेना होता है क्योंकि सादी से पूर्व लड़की से यह उम्मीद करते है कि वह कटाई-बुनाई के कामों में पारंगत हो। उसकी अनभिज्ञता के कारण सम्बन्ध नहीं भी जोड़ा जाता हैं। इस लोकगीत से यह बात सामने उजागर होकर आती है कि कपड़ा बनना इस समाज की परम्परा रहा है। वे पारम्परिक पहनावों को घर पर ही तैयार करना इनकी विशेषता है। सामाजिक विचार से लड़कियों की कटाई-बुनाई का ज्ञान उनके गुणों को प्रदर्शित करता है।

बोड़ो समाज की रीत-नीतियों में कृषि का विशेष महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कृषि को ये अपना मुख्य पेशा मानता है। कृषि के माध्यम से ये अपना

जीवन यापन करते आ रहे है। कृषि से सम्बन्धित एक गीत जिसमें पति-पत्नी एक दूसरे से हास-परिहास करते हैं। जैसे-

बोड़ो मूल भाषा मे

बुरि ऐ ऐ बुरि ऐ
ऐ- अखा नायसि नायसि
खुन लुनायआ।
हनै लाफा साइ'ख आलाय
उराव मारि मारि गाबलांबाय।
बोराय ऐ ऐ बोराय ऐ,
ऐ-अखा नायसि नायसि
हाल हुनुय नायआ
हनै सानजाहा सानालाय जौबोनाय।[11]

हिन्दी में अनुदित रुप

पति – हे बूढ़ी स्त्री ! हे बूढ़ी स्त्री !
क्या तुम उषा काल से पहले नहीं जागी हो
और न सूत काती हो ?
आकाश में उड़ते केतकी पक्षी गा रहे।
पत्नी – हे वृद्ध पुरुष ! हे वृद्ध पुरुष !
आप खेत जोतने जा रहे हैं,
किन्तु विलम्ब हो चुका
सुर्य पहले ही ऊँचा उठ चुका,
पूर्वी लाल आकाश में।[12]

पति को खेत पर हल चलाने के लिए जाना है पर पत्नी नींद से नहीं जागी है। पति अपने स्त्री से कहते है कि उषाकाल हो चुका है तुम सो कर नहीं उठी हो, लेकिन पत्नी कहती है कि हे वृद्ध पुरुष ! तुम्हारा भी तो खेत जाने का समय विलम्ब हो चुका है। ऐसे मधुर गीतों के माध्यम अपने कृषक जीवन की अभिव्यक्ति का बोध होता है।

असम में तीन प्रमुख लोक उत्सव है, जिस उत्सव को बिहुँ के नाम से जाना जाता है। जिसके नाम क्रमानुसार इस प्रकार है- 'बहाग बिहु' (Bahag Bihu), 'काति बिहुँ' (Kati Bihu), 'माघ बिहुँ' (Magh Bihu) आदि। 'बहाग बिहुँ' को ही असमीया में 'रंगाली बिहुँ' और बोड़ो में 'बैसागु' के नाम से जाना जाता है। असमीया समाज और संस्कृति में इन बिहुँ उत्सवों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ये सारे उत्सव ऋतुओं, कृषि जीवन और सामाजिक जीवन से सम्बन्धित है। इन उत्सवों की यही मान्यता के सम्बन्ध में यह कहाँ गया है कि – Festivals marking various agricultural operations almost are invariably marked by ceremonies involving sexual intercourse.[13] 'बहाग बिहुँ' या 'रंगाली बिहुँ' (असमीया) तथा 'बैसागु' (बोड़ो) असमीया समाज की एक महत्वपूर्ण ऋतु कालीन उत्सव है। यह उत्सव कृषि कार्य से पूर्व वसन्त ऋतु में मनाया जाता है यानि भारतीय पंचाग के अनुसार यह वर्ष के प्रथम माह 'बैसाग' के प्रथम दिन में इसे मनाया जाता है। भारत के प्रायः सभी उत्सव प्रकृति और ऋतु से ही सम्बन्धित है। इसलिए प्रकृति हमारे सामाजिक, धार्मिक जीवन का एक अभिन्न अंग हैं। बोड़ो समाज में बैसागु को वसन्त ऋतु के आगमन के साथ मानये जाने की परम्परा है। 'बैसागु' की मान्यता के समबन्ध में यह धारणा है कि "Baicagu is the greatest festivals of Bodos. This is a seasonal as well as an agricultural festival like the Bihu. Baicagu is a spring festival or the festival celebrated to usher in the New Year" [14].

अगर कालक्रमानुसार बिहुँ पर विचार करे तो दूसरा बिहुँ उत्सव में 'काति बिहुँ' का नाम आता है। यह उत्सव पारम्परिक रुप से 'कार्तिक मास' के प्रथम दिन में मनाया जाता हैं। 'काति बिहु' विशेषकर खेतों में फसल के कताई से पूर्व माया जाता है जिस समय बोये गये फसलो-अनाजों में दाने आने शुरु हो जाते है तथा किसानों के मेहनत का रंग दिखना प्रारम्भ हो जाता हैं। इस उत्सव के दौरान प्रत्येक कृषक और आम लोग अपने-अपने खोतों-खलिहानों में जाकर दीप प्रज्वलित कर लक्ष्मी देवी की उपासना करते है ताकि उनके द्वारा बोये गये फसलों की ठीक-ठीक वृद्धि हो, और आनाजों-धानों के दानो से उनके भन्डार साल भर समृद्ध रहें।

कालक्रमानुसार वर्ष के अन्तिम महीना 'माघ' के प्रारम्भ के समय में 'माघ बिहुँ' उत्सव का आयोजन किया जाता हैं। यानि की फसलों के काताई और अनाजों को भन्डारों में सुरक्षित रखने के पश्चात् मनाया जाने वाला पर्व हैं। यह उत्सव भोग, तृप्ति और आनन्द के दृष्टिकोण से मनाया जाता है। इसलिए इस उत्सव को 'भोगाली बिहुँ' के नाम से भी जाना जाता हैं। विविध जाति-जनजातियों के सारे गावँ, समाज, समुदाय एक साथ मिलकर मकरसंक्राति के पूर्व सामुहिक भोजन करते हैं। और अपने घरों में नये-नये तरह के पकवान जैसे 'पीठा' (चावल से बने पकवान), मद्य, मांस-मछली आदि का भोग कर आनन्द की अनुभूति प्राप्त करते है। इस उत्सव को सभी जाति-जनजाति एक साथ मनाते हैं और प्राचीन काल से यह मान्यता रही है कि जो लोग अभाव ग्रस्त है उन्हें भी इसमें सम्मिलित करते हैं।

'बैसागु' बोड़ो समाज एक रंगीन उत्सव है। इस उत्सव को कृषि कार्य में लीन होने से पूर्व मनाया जाता है। असमीया 'बिहुँ' उत्सव को ही बोड़ो में बैसागु के नाम से जाना जाता है। बैसागु सामाजिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है। बैसागु खुशहाली का प्रतीक है। इस उत्सव को विविध प्रकार के नृत्यों, विविध प्रकार के व्यंजनों के भोग कर मनाया जाता है। यह एक प्रकार से वसंत कालीन उत्सव है। इसमें तरह-तरह के गीत, नृत्य को प्रस्तुत कर लोगों को मनोरंजन करने का भी प्रयास किया जाता है। सम्पूर्ण असमीया कृषक जीवन में इस उत्सव का काफी महत्वपूर्ण स्थान हैं। झूम-झूम कर नाचना तो इस उत्सव का प्रधान अंग हैं। एक उदाहरण दृष्टव्य है-

बोड़ो मूल भाषा मे

बैसागु आयै-बैसागु
बैसागु-बैसागु
बोथोर गोजामा थांलायवाय
बोथोर गोनान फैलायबाय
बैसागु आयै-बैसागु
बोथोर गोदाननि बार मोन्नानै
दैसा दैखुवा, बंफां लाइफांआ
दावमा दावसाया,
रंजा खांबाय हनै
फैदो दिने फैदो बयबो
बोराय बुरै, सेंग्रा सिख्ला,
गथ गथाय रंजा दिनि
बैसागु आयै-बैसागु[15]

हिन्दी में अनुदित रुप

हे प्रिय माँ !
बैसागु आ गया है।
यह वही बैसागु है
पुराना वर्ष बीत चुका,
और नया वर्ष आ गया
हे माँ, हमारा बैसागु आ गया है।
नव वर्ष की नयी हवा, नया जीवन
और नयी आशा लायी है।
नदियाँ एवं झीलें
पेड़ तथा लतायें
पक्षी और जानवर
सभी जीव आनन्द से नाच रहे
सभी बाहर आओ,
और वृद्धा
युवक-युवतियाँ
लड़के और लड़कियाँ
हम एकत्र हो
आनन्द मनायें।
हे माँ ! हमारा बैसागु आ गया।[16]

प्रस्तुत लोकगीत में स्पष्ट रुप से यह अभिव्यक्त हुआ है कि पुराना वर्ष बीत कर नया वर्ष का आगमण हो चुका है। नये वर्ष की नयी हवा और पानी ने उत्साह और उमंग को साथ लाया है। प्रकृति के समस्त उपादान नदियाँ, झीलें, पेड़, लताये पुश-पक्षी आदि भी इसके आगमण से आनन्दित होकर नृत्य कर रहे। लोग भी इसके आने से वृद्ध, बच्चे, युवक-युवतियों को एकत्र कर आनन्द मनाने की कामना व्यक्त कर रहे हैं। बैसाग उत्सव पूर्ण रुप से प्रकृति के जुड़ा हुआ है।

सामाजिक लोकगीतों के पश्चात् तीसरे स्तर में बोड़ो रोमान्टिक लोकगीतों का अनुशीलन कर देख सकते है। रोमान्टिक भाव का सम्बन्ध प्रेम, प्रसन्नता, रुची आदि से होता है। इस प्रकार के प्रायः गीतों में यह देखा गया है कि इसमे नीजि जीवन की व्यक्तिगत भावनायें सम्पृक्त हुयी होती है। इन गीतों में प्रतीकों के प्रयोग को देखा जाना स्वाभाविक हैं। रोमान्टिक गीतों में प्रकृति के विविध तत्वों के द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त किया गया है। पुष्प के खिल कर मुरझा जाने की तुलना एक युवक अपने यौवन से करता है। जैसे-

बोड़ो मूल भाषा मे

बिबार बिबार गेवलां
हार्सिडे बारनानै हार्सिडे रहायलांबाय।
जोनि बैसोअ बो राग लांबाय।[17]

हिन्दी में अनुदित रुप

हे पुष्प ! हे पुष्प !
पूर्णतः कुसुमित पुष्प
तुम अकेले खिलते, अकेले मुरझाते हो।
हमारा यौवन,
सुनेपन में मुरझा रहा है।[18]

रोमान्टिक बोड़ो लोकगीत में वियोग चित्रण को भी स्थान दिया गया है। रोमान्टिक गीत में वियोग के चित्रण को केतकी पक्षी के द्वारा अभिव्यक्त करते हुये देखा गया है। जैसे-

बोड़ो मूल भाषा मे

बिफिलां बहराव लाफा साइख दावआ
हदावरि बिदावरि मानो गाबदो ?
बिनि गाबनायाव आंनि बिखाया
आलौहाब खालौहाब मानो जादों।
बिखानि दाहाखौ बिखा थालायाव दोन्नानै,
जुजायनि अरगेङाव मोन मोन खामजानानै,
जाबायदोंसै हाबाब आय' आंलाय
गोसोनि गाबनायाव फोथों नाथों।[19]

हिन्दी में अनुदित रुप

रात्रि के प्रथम पहर में
केतकी चिड़िया क्यूं विलापती ?
अपने वियोग की व्यथा,
विलपन उसका होता मुझसे गुंजित
जलता रहता मेरा दिल अंतस्थल तक।
विलपन कराता मुझे,
प्रतिक्षण असहाय और पराजित सा।[20]

केतकी पक्षी का विलाप एक प्रेमी युवक को असहनीय सा लगता है। उसके विलाप से स्वयं को ओर अधिक पराजित सा अनुभव करता है। वियोग की अनुभूति सभी को पराजित करती है। प्रस्तुत गीत में केतकी पक्षी के माध्यम से अपने हृदय में विद्यमान वियोग की आतुरता को प्रदर्शित करना काव्यत्मकता के भाव को बोध कराता है।

रोमान्टिक गीतों के उदाहरणों के पश्चात् बोड़ो समाज के धार्मिक एवं आध्यात्मिक विश्वास से सम्बन्धित गीतों को अनुशीलन के दृष्टिकोण को ले सकते हैं। बोड़ो समाज का अपना एक धार्मिक विश्वास है जिसमें विविध प्रकार के दैव-दैवियों की उपासना पर बल दिया गया है। उनके सारे देवता प्रकृति परक है। बोड़ो लोकगीतों में पाये जाने वाले धार्मिक गीतों को मूलतः तीन भागों में विभक्त करके देखा जा सकता है। जैसे- प्रार्थना गीत, आध्यात्मिक गीत और उपदेशात्मक गीत। 'बाथो' को बोड़ो समाज में प्रधान देवता के रुप में स्थान दिया गया है। बाथौ के सम्बन्ध में कहाँ जाता है कि-

1. The part of percel of holy festivals of Bathou religion of the Bodos, the eighteen Gods are worshipped in this festivals, Bathou Maharaja being the central figure. The festival is guided by a Douri, the main perist in accociation with Doudinia and Panthal Douri, Kham, Siphung, Zotha are used as a rhythm to the dances of Doudini and other participants[21].
2. In Bathouism is a form of forefather worship called Obonglaoree. The sijwu plant (belonging to the Euphorbia genus), is taken as the symbol of Bathou and worshipped. In the Bodo Language Ba means five

and thou means deep. Five is a significant number in the Bathou religion. Five Philosophies: Earth, Water, Air, Sun and Universe. These five elements are Bathou and the master of five elements is called Bwrai Bathou or God[22].

धर्म और दर्शन सभी मानव जातियों की अपनी एक खास तरह की होती है। जातियों के विकास में सभ्यता, संस्कृति और परम्परा के निर्वाह की आवश्यकता होती है। वर्तमान काल में बोड़ो समाज अपने प्राचीन धर्म, दर्शन और परम्परा को मानते हुये अपनी संस्कृति को जीवित किये रखा है। बाथौ बोड़ो समाज का प्रधान देवता एवं धर्म है। बाथौ धर्म के अन्तर्गत कई प्रकार के उत्सवों का आयोजन किया जाता है। जिसमें से एक 'खेराई' उत्सव है। खेराई उत्सव हो या अन्य उत्सव वे सारे कृषि से ही सम्बन्धित होते है। खेराई उत्सव बोड़ो ध्रर्म के अन्तर्गत मनाया जाने वाला एक विस्तृत एवं खर्चीला पूजा विधान है। खेराई उत्सव में नर्तकी, ओझा या पुरोहित, तीन प्रकार के वाद्य यन्त्र (जैसे ढोल, मंजिरा और वासुरी जिसे बोड़ो में सिफुग कहाँ जाता है), औजार (तलवार और ढाल) आदि काफी चीजों की आवश्यकता होती है। उत्सव के आयोजन के दौरान उक्त सभी वस्तुयें अपनी भूमिका का निर्धारित करता है। खेराई एक बलि विधान से सम्बन्धित उत्सव है इसमें कई सारे जीव-जन्तुओं की बलि देवताओं को प्रसन्न करने के फलस्वरुप दी जाती हैं। ओझा (पुरोहित) इस उत्सव के समय दैवधुनि को विशेष प्रकार से प्रयोग में लाते है कि क्योकि ऐसी धारणा है कि दैवधुनि के माध्यम से वह (पुरोहित) देव-देवियों के साथ सम्वाद को स्थापित करता है। ताकि उन्हें धरती पर आवाहन कर समस्त मानव जाति में शांति और प्रसन्नता के वातावरण को प्रवाहित किया जा सके। यह उत्सव एक प्रकार से प्रकृति के साथ विशेष रुप से जुरा हुआ है। इस उत्सव के माध्यम से जिन-जिन देवताओं की पूजा की उनमें से प्रायः प्रकृति की शक्ति के रुप में ग्रहण किया जा सकता है।

बोड़ो लोकगीतों से प्रार्थाना परक के सुन्दर गीत के उदाहरण को ले सकते है-

बोड़ो मूल भाषा मे

सोरजिगिरि सिगाङाव
आलारि लानानै
गुगुरुब गुगुरुब
खुलुमगोन जों आफा नों फिफाखौलाय।
अन्नाय सारस्रिहर बोर सारस्रिहर,
आनान गसाइ नों।[23]

हिन्दी में अनुदित रुप

हे पिता, हे सर्जनहार,
हम घुटनों के बल झुकते है,
और आपकी प्रार्थना करते है
एक दीपक जला कर।
आप हमें प्यार करें,
और हम पर आशीर्वाद की वर्षा करे।[24]

उक्त गीत में ईश्वर को पिता और सर्जनहार के रुप में आरोपित कर उसे आशीर्वाद की आशा हेतु इच्छा प्रकट किया गया है।

आध्यात्मिक लोकगीत के अन्तर्गत देवताओं से लोकमंगल का भावना को व्यक्त करते हुये देखा गया हैं। 'बाथौ' देवता का स्मरण करते हुये यह देखा गया है कि सब मनुष्य के पापों एवं कष्टों का निवारण हो। लेकिन यहाँ एक बात स्पष्ट करना चाहुँगा कि कई लोग बाथौ की तुलना शिव से करते है परन्तु यह एक विवादास्पद की स्थिति को जन्म देती हैं। बोड़ो धर्म और दर्शन में भी हिन्दु धर्म के प्रभाव को स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है। बाथौं को बोडों समुदाय में कुल देवता का मान प्राप्त है। इसके निर्धारण के लिए या प्रतीक चिन्ह् के रुप एक 'सिजु वृक्ष' (जिसका अंग्रेजी नाम Euphorbia splendends है) को लिया जाता है। जिसके पाँच सिद्धान्त माने जाते हैं। बाथौ शब्द के बा का अर्थ हैं पाँच और थौ का अर्थ हैं सिद्धान्त। ये पाँच सिद्धान्त हैं- पृथ्वी, जल, वायु, सूर्य और ब्रह्मांड। सिज वृक्ष में पाये जाने वाले विशेष प्रकार से पाँच गाथ पाया जाता है तथा इस वृक्ष की यह विशेषता है कि एक प्रकार से यह वृक्ष मरता नहीं है उसकी तहनी को काट कर किसी भी स्थान पर लगा देने वह पुर्णः उग आता है। इसीलिए प्रचीन बोड़ो समुदाय यह मान्यता धारण कर चुकी है कि ईश्वर अमर है। एक प्रकार से वह अमरत्व की ओर इशारा करता है। मान्यता यह है कि ईश्वर अजर और अमर है, उक्त पाँच तत्व शाश्वत है। इन्हीं पाँच तत्वों को प्रतिनिधित्व करने वाले देवता को ही बोड़ो समुदाय बाथौ बराय के नाम से अभिहित किया जाता है। प्रकृति के इस रुप को यह समुदाय सर्वश्रेष्ठ देवता के प्रतीक स्वरुप ग्रहण करते है। एक गीत में बाथौ बोराय को महान राजा के में घोषित करते हुये देखा गया है-

बोड़ो मूल भाषा मे

एहेम दे बाथौ बोराय महाराजा।
ओजों सोर सोर दङ ?
आइलें, खाजि, अब्ला खुंगुर दं
आग्रा खैला, राजफुथर, राजखान्द्रा दं
सालि जोमोन दं, बाग रादा दं, शिब राजा दं
आर दं आइ मानासु, आइ दिबावलि, कुबिर महाराजा
अन्दर महलाव सोर दंङ ?
मावथानस्रि, संराजा, बुलिबुरै दंङ
दे मा खालामबावगोन आइनाफोर आफाफोर।
दिनै नोंथांमोननो बुलि होनाय जायो।
नोंथांमोनहा खुसि जानानै बुलि
होनायखौ नाजावफैदो।
खुसि जानानै मुनुसुनि दायखौ निमाहा होदो।
गथ गथाय आब्रा आखुरा दं,
नोंथांमोनहा आजिखालिलिनि मोदाय नङा
अराय दिननि मोदाय दावदाय।
दहाइ आइफोर आफाफोर
बे नआव रग बियादि
हाबहोनो मोन्नाय नङा।
दाहाल जाते थलार जाते खालाम नांगोन।
दहाय आफाफोर आइफोर नोथांमोनखौ
गले गले बुंनानै खुलुमनाय जायो।[25]

हिन्दी में अनुदित रुप

हे महान राजा बाथौ बोराय
इस ओर कौन है ?
आइलें, खाजी, आब्ला खुंगुर
आग्रा खैला, राजपुत्र, राजकन्या,
सालिजामोन, बाघराजा तथा यहाँ विराजमान शिवराजा।
और यहाँ है मा मानुसाऔर ममा दिबावलि।
तथा भगवान कुबेर।
और यहाँ भीतरी भाग में कौन है ?
है यहाँ माक्थनस्रि, संराजा।
तथा बुलिबुरै।
हे माता-पिता गण !
मैंने आज आप लोगो को चढ़ावा दिया है।
आप प्रसन्न हों
और मनुष्यों के पापों को क्षमा कर दें।
हम बच्चे अनभिज्ञ,
दयापूर्वक क्षमा करे तथा प्रसन्न रहें।
आप लोग आज के देवता नहीं है
आनादि आप।
हे माता-पितागण ध्यान रहे
कि आप इस घर में महामारी नहीं भेज सकते।
आप भली भाँति ध्यान रखें,
बल्कि अपनी तलवार एवं ढाल से
सभी संकटों ओर व्याधियों से रक्षा करें।
आप लोगो को प्रणाम,
बारम्बर।[26]

उपर्युक्त गीत में उल्लेखित शब्द जैसे आइलें, खाजी, आब्ला खुंगुर, आग्रा खैला, राजपुत्र, राजकन्या, सालिजामोन, बाघराजा तथा शिवराजा आदि बोड़ो समाज में देव- देवी के रुप चिन्हित् किये जाते है। इनकी उपासना बोड़ो समाज में मनाये जाने वाले खेराई उत्सव (पूजा) में विस्तृत रुप में की जाती हैं। इस पूजा का प्रधान उद्देश्य है सर्वजनिक और नीजि जीवन का कल्याण और रक्षा करना। जीवन की सुरक्षा के लिए, सभी लोग इसे नीजि रुप से भी मनाते आ रहे है। वहीं दूसरी ओर सभी ग्रामवासियों के कल्याण के लिए सभी लोग एक साथ मिलकर मनाते है। जीवन की सुरक्षा और कल्याण के अलावा फसल की कटाई के लिए भी किया जाता है। बोड़ो जनजाति मुख्य रुप से कृषि पर ही निर्भर रहत है। कृषि ही इनके जीवन-यापन का प्रमुख साधन है। कृषि कार्य करने से पूर्व और बाद में खेराई पूजा का आयोजन किया जाता है तथा इस पूजा विधि के दौरान विविध प्रकार के देव-देवियों की पूजा-अर्चन भी की जाती है। खेराइ उत्सव या पूजा[27] काफी खर्चीला तथा इसके विधि-विधान काफी विस्तृत है। दयनीय आर्थिक अवस्था के कारण बोड़ो समुदाय के लोग इस उत्सव का आयोजन नियमित रुप से नहीं कर सकते है।

बोड़ो धार्मिक लोकगीतों के अन्तर्गत उपदेशात्म्क गीत मे समाज एवं लोक कल्याण की निहित भावना को देखा जा सकता है। मनुष्यों को अपने कष्टों से भरे जीवन में कभी भी धैर्य को नहीं खोना चाहिए। उपदेशात्मक गीत के अन्तर्गत इस प्रकार के सुन्दर गीत को भी अवलोकन किया गया है जिसे दृष्टान्त स्वरुप उल्लेख किया जा सकता है।

बोड़ो मूल भाषा मे

निदाननि समावल गोसोखौ हमथांनागौ,
बिदि उन्थ्रिनांगौ
निदान फैबोला निदान सफैबोला।
गावनि गोसोखौ हमथानांगौ।
हे दोहोरोम सोरजिगिरि सोरदिनायखौ,
सानथ्रहाय बिनि आव फावखौ।
बंफां लाइफां आर मानसि मैदेरखौबो सोरजिदों
आय बारा गोबाव नंलिया बे संसाराव।[28]

हिन्दी में अनुदित रुप

कृष्ट एवं दूर्भाग्य के समय
धैर्य होना चाहिये।
हमारे संसार के प्रभु की सृष्टि
के रहस्यों की गहराई को
कोई माप नहीं सकता है।
पेड़, लतायें और झाड़ियाँ,
हाथी एवं मानव
सभी का सृजन उन्होंने किया है।
सुनिये हे मनुष्यगण !
इस संसार में कोई भी चिरस्थायी नहीं है।[29]

इस संसार की प्रत्येक वस्तु अस्थायी है जिसे प्रस्तुत लोकगीत में स्पष्ट रुप से प्रकट किया गया है। लोकगीत में इस प्रकार की बातों का उल्लेख होना निश्चित रुप से समाज के प्रति नैतिक भावना को बनाये रखने के लिए आग्रह किया गया है। इस गीत के माध्यम से स्पष्ट किया गया है कि यह संसार क्षणभंगुर है और एक मात्र प्रभु की सत्ता ही शाश्वत हैं।

उपदेशात्मकता में देवी लक्ष्मी सम्बन्धित गीत को भी अवलोकन किया जाता है। जो उनके कृषक जीव को बोध कराता है। इस समुदाय का सामाजिक जीवन कृषि से जुड़ा हुआ है। बोड़ो समाज में देवी लक्ष्मी को विशेष महत्व दिया गया है लक्ष्मी को बोड़ो समाज में माइनाव कहाँ जाता है। माइ का अर्थ है धान। असम प्रान्त के ग्रामीण अंचलों में एक विशेष पद्धति के आधार पर धानो को रखने की व्यवस्था घर में बनाया जाता है। इसीलिए अपने घरों में देवी लक्ष्मी के रुप में धानों के भण्डार को घर के पूर्व दिशा में निर्माण किया जाता है। इससे सम्बद्ध एक सुन्दर लोकगीत को देखा जा सकता है। जैसै-

बोड़ो मूल भाषा से

आय माइनाव बिमा दिनैलाय लांदिनि
सोरांनि मन्दिरावा
नों बाइदि अनसुलि माइनाव
गैलिया जोंहा बे संसाराव
अ लै मा इसे मोजां जोथि माथि
मिनिखैरो जोंनि बाख्रिआव थाफैदो
आसु माइनाव बिमा
मा इसे जोंथाव बाख्रिआव
फैबायदे फैबायदे जोंनि बाख्रिआव[30]

हिन्दी में अनुदित रुप

ओ माँ लक्ष्मी अन्नदेवी !
करते तुम्हारा प्रवेश
दीपित मंदिर में।
और नहीं कोई इस संसार में
तुम्हारी जैसी सुन्दर और उज्जवल।
उज्जवल चकाचौंध
करती आती माँ हमारे
बाख्रि (भण्डार) में।
माँ आसु माइनाव
उज्जवल देवी
आती रहस्य बिखेरती
हमारे बाख्रि में।[31]

उक्त गीत से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि धानो के रुप में देवी लक्ष्मी के रुप में घर आना खुशहालि का प्रतीक है। इस गीत में कषकों के खेत में अच्छे फसलों के होने की ओर भी संकेत किया गया हैं।
एक ओर लोकगीत में लक्ष्मी माता को घर पर पधारने के लिए आग्रह करते हुये देखा गया है। कृषक देवी लक्ष्मी से यह कहता है हमें कभी मत भूलना। तथा धानों का विविध प्रकार के रंगों के होने की बात को भी लोकगीत के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। जैसे-

बोड़ो मूल भाषा मे

आय' बिमा माइनाव
फैदौ नों जोखौ अन्ना
दे आयै जोंनि नआव
दाथा आय जोंखौ बावना
दाथा आय जोंखौ बावना
दाथा नोडो बावस्रि जाना
हे आयै बावस्रि जाना
थायो नोंलाय जेबो महराव
गोजा गोसोम बाइदि बाइदि
हे आय जेबो महराव।[32]

हिन्दी में अनुदित रुप

ओ माँ लक्ष्मी माइनाव
हमारे प्यार में चली आओ,
ओ मा हमारे घर में।
मत भूलना हमें
मत रहना दूर हमसे
रहती हो माँ तुम विभिन्न रंगों में,
काले, लाल सभी रंगों में,
हे माता ! विभिन्न रुपों में।[33]

गीत में धानों के विविध रंगों का उल्लेख होना इस बात को संकेत करता है कि बोड़ो जनजाति अपने खेतों में विभिन्न प्रकार के धानों के फसलो का रोपन करते है।
बोड़ो लोकगीत के विविध स्तरों में मधुर बालगीतों से सम्बन्धित लोकगीतों को भी अवलोकन किया जा सकता है। लोकगीतों के अन्तर्गत प्रकृति के विविध उपादानों को माध्यम बनाकर माँ अपने रोते हुये बच्चे को मनाने का उपाय खोजती है। जैसे-

बोड़ो मूल भाषा मे

दाव खुन्थुलु खुन्थुलु बंफां मुरानि थिया,
आलाय बिलाय गाबबाबो रावबो लानाय गैया
जग्रब जग्रब मोसाबाबो रावबो नायनाय गैया।[34]

हिन्दी में अनुदित रुप

चोंच मारकर लकड़ी की खोखला करता, ठूंठ पर बैठा तोता।
नहीं कोई यहाँ, जो करे शान्त हमारे प्यारे बच्चे को।
रोता लगातार,
फिर भी नहीं कोई इसे सम्भालने वाला।
वह नाचता या बैठता,
नहीं कोई इसे देखने वाला।[35]

उक्त गीत में एक बोड़ो स्त्री की कर्मठता की ओर संकेत किया गया है। अकसर ग्रामीण अंचलों में बोड़ो महिलायें अपने घर के लिए परिश्रम करती है। जंगलों में लकड़ी काटना और अनन्य जैसे कार्यों में लिप्त रहती है। इस गीत में एक बोड़ो स्त्री अपने बच्चे को छोड़कर जंगल में लकड़ी संग्रह करने के लिए जाती है लेकिन उसके बच्चे की देख-रेख करने वाला कोई नहीं होता। माँ की राह में बच्चा रोता रहता है। एक प्रकार से माँ खेद प्रकट करते हुये गीत के माध्यम से बच्चे को शान्त कराने का प्रयास करती है। वर्तमान समय में गाँवों का भ्रमण करने पर ऐसे दृश्यों को परिलक्षित किया जा सकता है।
बोड़ो लोकगीत के अनुशीलन के इस स्तर में विवाह सम्बन्धी लोकगीत भी प्रकाश में आता है। विवाह समाज व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। विवाह मात्र परिवार से ही जुड़ा नहीं होता बल्कि मनुष्यों के सामाजिक संगठन को भी मजबुत बनाती है। विवाह हमारी सभ्याता और सामाजिक परम्पराओं की रीति-नीति प्राचीन प्रतीक हैं। बोड़ो समाज में विवाह के समय में विविध प्रकार के गीतों को सुनने को मिलता है। विवाह के दौरान बेटी (दुलहन) के रोते पर उसकी माँ उसे दिलासा देती है जिसे एक गीत के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।

बोड़ो मूल भाषा मे

मानो गाबदों आयै मानो गाबदों
दागाबसै आयै दागाबसै
मेफाल हौवानो हराखै
हार्सा हौवानो हराखै
राइजो जोनोसै बर हौवानो हरदों
आयै हरदों [36]

हिन्दी में अनुदित रुप

पुत्री तुम क्यों रोती हो ?
मत रोओ,
तुम ब्याही गयी हो

किसी जाति- च्युत से नहीं
बल्कि एक सही और योग्य बोड़ो युवक से
एक उचित पारिवारिक जीवन बिताने के लिए।[37]

उक्त गीत में विवाह के समय वर के योग्य होने की आवश्यकता की ओर भी ध्वनि किया गया है। तथा लड़की से उसकी माँ यहीं दिलासा देती है कि उसका विवाह किसी अन्य जाति के पुरुष के साथ नहीं हुआ है अपितु अपने समुदाय या जाति के मध्य ही हुआ है।
लड़की का माँ आगे और भी अपनी बेटी से कहती है कि-

बोड़ो मूल भाषा मे

दागाबसै आयै दागाबसै, दागाबसै
अमा गिदिरा बार खुरमानि,
फिसा हिन्जावआ मालायनि
दागाबसै आयै दागाबसै
गाबब्ला खुब्लाबो नोमा नोमफाखो मोनलिया
मेफाल गंगारनो हराखै,
बरनि आसर, बरनि बिसारजों
बर हारिनो हरदों, हरदो राइजो जानासो।
गाबनाय खुनायखौलनागारनै
आनान गसाइ बिनान गसाइखै
आंथि गसाब आखाय नारजाब खालामनानै
रंजा बाजासो मावै दाडैसो राइजो जादो।[38]

हिन्दी में अनुदित रुप

मत रोओ, बेटी मत रोओ।
मोटा सूअर सगे- सम्बन्धियों के लिये है।
एक सयानी लड़की
समान रुप से दूसरों के लिये है।
चाहे रो लो जितना या करो विनती
फिर भी माता-पिता के घर नहीं रह सकती।
तुम नही प्रदान की गई हो
एक नेपाली या भूतिया को
बल्कि एक बोड़ो युवक को,
बोड़ो प्रथा और रीति में रहने के लिये।
रुदन से विरत रहो प्रिये।
करो ईश्वर की प्रार्थना
और रहो कर्मरत जीवन जीने के लिए।[39]

विवाह एक लड़की के लिए रुदन का विषय नहीं हैं अपितु कर्मरत सुखी जीवन का संकेत मात्र है। इस गीत से बोड़ो समुदाय की बहुत कुछ बाते अभिव्यक्त होती हैं। प्रस्तुत गीत में स्पष्ट रुप से उदाहरण द्वारा यह बताने का प्रयास किया गया है कि लड़की पराई धन होती है। जैसे- 'मोटा सूअर सगे-सम्बन्धियों के लिये' (अमा गिदिरा बार खुरमानि) ठीक वैसे ही एक सयानी लड़की / समान रुप से दूसरों के लिये है (फिसा हिन्जावआ मालायनि) आदि बातें कहकर माँ अपनी भावना को व्यक्त करती है। लेकिन 'सूअर' शब्द बोड़ो समुदाय की अन्य बातों को भी ध्वनित करने का प्रयास करती है जो उनके समुदाय के खान-पान की शैली एवं रीति-नीति से सम्बन्धित है। बोड़ो समाज में सूअर पशु का विशेष महत्व है। इस समाज के विविध सामाजिक अनुष्ठानों में सूअर के मांस को परोसते हुये देखा जा सकता हैं। खान-पान के दृष्टिकोण से सूअर इस समुदाय का पारम्परिक भोजन (traditional food) के रुप में लिया जाता है। बोड़ो समुदाय से सम्बन्धित अन्य जनजातियों के समुदाय भी इसे अपना पारम्परिक भोजन मानता हैं। यह कह सकते है कि सूअर पशु इनके पशुपालन शैली का एक अभिन्न अंग है।
माता-पिता के लिए कन्यादान करना एक सुखद अनुभूति जितना होता है उनता ही दुःख का कारण भी होता है। सिर्फ माता-पिता के लिए ही नहीं अपितु परिजन के समस्त सदस्य भी कन्या (दुलहन) की विदाई के समय में उसकी सहेलियाँ, बहन आदि को भी दुःख होता हैं। बहन अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति निम्नलिखित गीत के द्वारा करते हुये दिखाई पड़ते है-

बोड़ो मूल भाषा मे

ऐ बैनि ऐ बैनि
दागाबसै दागाबसै
गय खान्दिनै खालामनायमोन,
बिसिना गंसेआव उन्दुनायमोन
मिनिबाला रंजाबालामोन
दिनैनिफ्राय एरा एरि जाबाय।
नोंनि नोमफाया आमोखा सेंग्राजों
नोखौ जुलि खानानै होबाय
राइजो जादो मोजाडै अन्नानै बिनानै।[40]

हिन्दी में अनुदित रुप

मत रोओ, हे बहन, तुम मत रोओ।
सुपारी के लघुतम अंश को भी हम
मित्रता और एकता में समभाग खाते थे।
हम एक ही विछावन पर सोते थे,
हम हँसते और आनन्द मनाते थे।
आज से हम अलग हो गए हैं।
तुम्हारे पिता ने तुम्हें दान कर दिया है
उस युवक को।
उस परिवार को भली-भाँति रखो और प्रसन्न रहो। [41]

विवाह सम्बन्धी गीतों में यह परिलक्षित हुआ है कि लड़की का विवाह जिस घर में हुआ है वह उनके सदैव निष्ठावान बना रहे ताकि घर में खुशहाली का वातावरण बना रहे। लड़की से भी यह अपेक्षा की गई है कि वह पति के घर में शान्ति स्थापित के साथ स्वयं भी वहाँ प्रसन्न रहे।
अधोल्लेखित बोड़ो लोक गीत भी लड़की की विदाई से सम्बन्धित है। इस गीत में भी विदाई की हृदय विदारक भावना को प्रकृति के विविध उपादानों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है। जो उनके साधारण जीवन शैली को प्रकाशित करने की क्षमता रखता है।

बोड़ो मूल भाषा मे

हिन्जाव गोदान दिहुन्नाय समाव खन्नाय)
बगलरिद बगलरिद थंलिद
एम्बु बंगोला
दागाव खैना दागाब

बोथोर सबोला।
बारि खनानि जुखाम आखाय
दावखि खनानि दाव जोख्लि
लांनोसै आयै बुरखाय आखाय।[42]

हिन्दी में अनुदित रुप

(विवाह के समय गाए जाने वाला गीत)
जब उनका उचित मौसम आता है
चहचहाती है चेक-चेतिया चिड़ियाँ।
और मेढ़क फुदकते और कुदते हैं आन्न्द से।
तुम्हारे विवाह का समय
उसी प्रकार आ गया है,
मत रोओ मेरी बेटी ! तुम,
हे ! बगीचे कोने के मकई, उट्टा
एक कुवारी मुर्गी की भाँति
आज हम लोर ले जा रहे हैं
तेरे पति के घर
बेटी ! मत रोओ ! [43]

विवाह गीत के अन्तर्गत समर्पण भावना से सम्बन्धित गीत भी मिलते है। दुल्हे को कन्या समर्पित करते हुये एक गीत यह भाव परिलक्षित हुआ है कि पति का कर्तव्य है कि वह अपनी स्त्री की कुशलता पर भी ध्यान दे। गीत के भाव इस प्रकार है-
बोड़ो मूल भाषा मेः-

खैनाखौ लिंनानै आखायाव हमनानै
होबाय दिनै दोहोरोम खोरोम नोंनो गथायनानै
आखायखौ बुफाय आथिंखौ बुफाय
नोंनिनो दोहोरोम, बायबा जागोन नोंनिनो हानि
मालायनो हाथर बिमानि सना फिथर
गथायबाय नोंनो, दोहोरोम खोरोम नोंनि,
भगनि गैया गिनाय गैया, दानाय लुनाय गैया
थेवबो लाङोबोला नोंनो दोहोरोम खोरोम नोंनि।[44]

हिन्दी में अनुदित रुप

हमने की समर्पित दुल्हन तुम्हें,
धर्म कर्म के अनुसार दिया
घर ले जाओ उसे,
अपने कर्तव्य के प्रति सतर्क रहो।
यदि तुम अंगो को तौड़ते हो
क्षति तुम्हारी अपनी होगी,
क्योंकि, वह तुम्हारी जीवनसंगिनी है।
दूसरो के लिए हो सकता है मिट्टी का डला
मगर माँ के लिए वह सोने का डला।
अब वह पूर्णतः तुम्हारा दायित्व है।
भक्ति तथा बुद्धिमता में वह पूर्ण नहीं है।
तथा सुत कातना और बुनना भी नहीं जानती है।
तथापि तुमने स्वतः उसका चुनाव किया है।
अब अपने चयन पर दृढ़ रहो,
धर्म के प्रकाश में।[45]

उक्त गीत में सरल रुप से यह प्रकाशित हुआ है कि माता-पिता ने जिस रुप में अपने कन्या का पालन-पोषण किया है वह उन्हें उसी रुप में प्रिय है। कन्या के माता-पिता अपनी बेटी की अवगुण की ओर दुल्हे को आकर्षित करते है कि अब जबकि आपने सब कुछ जानकर उसे जीवन संगगिनी के रुप में चयन किया है। उसके लिए उसे सदैव वचन वद्ध रहना चाहिए। इस से यह बात भी सामने उभर कर सामने आयी है कि घर पर उसके साथ किसी भी प्रकार अत्याचार न किये जाये। यह गीत स्वच्छ दाम्पत्य जीवन के लिए नीति एवं विचार का भाव बोध कराता है। परिजन के अनुसार लड़की भक्ति तथा बुद्धिमता और सुत कातना और बुनना जैसे कार्य में अनभिज्ञ है सुत कातना और बुनना जो असमिया समाज और संस्कृति का प्रमुख हिस्सा रहा है। माता-पिता को उसकी अनभिज्ञता से भय है कि कहीं उसे पति अनादार करना न प्रारम्भ कर दे।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण एवं लोकगीत के अनुशीलन से यह बात स्पष्ट परिलक्षित होता है कि बोड़ो लोकगीतों में विविध विषयों का समिश्रण हैं। यह तो सर्वविदित है कि लोकगीत किसी एक समुदाय के सामाजिक जीवन की सहज और सरल अभिव्यक्ति है। गीतों के अनुशीलन से यह प्रकाशित होता है कि यह समुदाय जीवन के अनुभवों को सरल रुपों में मुखरित करते है। बोड़ो समुदाय प्राकृतिक परिवेश में रहने वाला एक जनजाति हैं। ये विशेष रुप से समतल स्थलों में रहने के अभ्यस्त है। इनके रहन-सहन, खान-पान, अचार-विचार, रीति-नीति सभी कुछ सरल एवं प्रकृति से आवद्ध हैं। प्रकृति के विविध उपादानों को वे अभिव्यक्ति के साधन के रुप में बड़ी कुशलता के साथ प्रयोग में लाते है। पशु-पक्षी, हो या अनन्य जीव-जन्तु सभी को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानते है। असल में यह समुदाय सीधे-सादे एवं सरल जीवन यापन करने वाले लोग है। लेकिन समय में आवर्त में इस समाज के विचार, रहन-सहन, रीति-नीति आदि विविध क्षेत्रों काफी परिवर्तन देखने को मिलने लगा है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. बसुमतारी, उथ्रिसार, संकलन कर्ता, भारद्वाज, डॉ. रमेश, सम्पादक एवं अनुवादक, बोड़ो लोक गीत, (संस्करण-) प्रकाशकः गाधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 2.
2. वही, पृष्ठ संख्या-2
3. वही, पृष्ठ संख्या-7
4. वही, पृष्ठ संख्या-8
5. वही, पृष्ठ संख्या- 42
6. वही, पृष्ठ संख्या- 43
7. वही, पृष्ठ संख्या- 48
8. वही, पृष्ठ संख्या- 49
9. वही, पृष्ठ संख्या- 51
10. वही, पृष्ठ संख्या- 51
11. वही, पृष्ठ संख्या- 55
12. वही, पृष्ठ संख्या- 56
13. B.N Bhattacharya, History of Indian Erotic- Literature, P. 10.
14. Dr. Anil Boro, Folk Literature of Bodos, P.67.
15. बसुमतारी, उथ्रिसार, संकलन कर्ता, भारद्वाज, डॉ. रमेश, सम्पादक एवं अनुवादक, बोड़ो लोक गीत, (संस्करण-) प्रकाशकः गाधी

हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 63.
16. वही, पृष्ठ संख्या- 64
17. वही, पृष्ठ संख्या- 79
18. वही, पृष्ठ संख्या- 79
19. वही, पृष्ठ संख्या- 101
20. वही, पृष्ठ संख्या- 101
21. Bodo-English-Hindi Dictionary, Bodo Sahitya Sabha, complied by Late Promad Chandra Brahma, Published by- Onsumoi Library, Kokrajhar-70, Assam Page No- 133.
22. Google/https://en.wikipedia.org/wiki/Bodo_people, March 2016.
23. 23. बसुमतारी, उथ्रिसार, संकलन कर्ता, भारद्वाज, डॉ. रमेश, सम्पादक एवं अनुवादक, बोड़ो लोक गीत, (संस्करण-) प्रकाशकः गाधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 208
24. वही, पृष्ठ संख्या- 208
25. वही, पृष्ठ संख्या- 195
26. वही, पृष्ठ संख्या- 196
27. "The Kherai is the greatest religious festival of Bodos. It is celebrated for the well being of the people and the hervest." Boro, Dr. Anil, Folk Literature of Bodos, Page No. 13.
28. बसुमतारी, उथ्रिसार, संकलन कर्ता, भारद्वाज, डॉ. रमेश, सम्पादक एवं अनुवादक, बोड़ो लोक गीत, (संस्करण-) प्रकाशकः गाधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या - 225
29. वही, पृष्ठ संख्या- 225
30. वही, पृष्ठ संख्या- 235
31. वही, पृष्ठ संख्या- 236
32. वही, पृष्ठ संख्या- 234
33. वही, पृष्ठ संख्या- 234
34. वही, पृष्ठ संख्या- 248
35. वही, पृष्ठ संख्या- 248.
36. वही, पृष्ठ संख्या- 265.
37. वही, पृष्ठ संख्या- 265.
38. वही, पृष्ठ संख्या- 270.
39. वही, पृष्ठ संख्या- 271.
40. वही, पृष्ठ संख्या- 278.
41. वही, पृष्ठ संख्या- 278.
42. वही, पृष्ठ संख्या- 267.
43. वही, पृष्ठ संख्या- 278.
44. वही, पृष्ठ संख्या- 279.
45. वही, पृष्ठ संख्या- 279.
46. बसुमतारी, उथ्रिसार (संकलन कर्ता), भारद्वाज, डॉ. रमेश, सम्पादक एवं अनुवादक, बोड़ो लोक गीत, (संस्करण-) प्रकाशकः गाधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली-।
47. नार्जि, भवेन, लेखक, बोड़ो कछारीर समाज आरु संस्कृति, (संस्करण- 2009), प्रकाशक- वीणा लाइब्रेरी, गुवाहाटी, असम।
48. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव, लेखक, लोक साहित्य की भूमिका, संस्करण-2008, प्रकाशक- साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद-।
49. Brahma, Dr. K, Author, Aspects of Social Customs of the Bodos, (Edition- 1989), Published by Shri Chiranjib Brahma, Gossaigion, Dist- Kokrajhar, Assam.
50. Brahma, Pramod Chandra, (Complited by), BODO-ENGLISH-HINDI DICTIONARY, (Fist Edition- 1996), Publisher- Onsumoi Libary and Bodo Sahitya Sabha, Kokrajahr- 70, Assam.
51. Boro, Dr. Anil, Writer, Folk Literature of Bodos, (First Edition – 2001), Publisher- N.L Publication, A.R.B Road, Panbazar, Guwahati – 01, Assam.